*धन्यवाद ज्ञापन**

दीपक मोहंती

आदरणीय प्रोफेसर जोसेफ स्टिगलिट्ज, गवर्नर डॉ. सुब्बाराव, विशिष्ट अतिथियो और रिज़र्व बैंक के सहकर्मियों,

वैश्विक संकट के समय से केंद्रीय बैंक काफी अधिक बौद्धिक छानबीन के अंतर्गत आ गए हैं, यद्यपि उन्होंने संकट का सामना करने में सभी परंपरागत बाधाएं पार की हैं। संकट की उत्पत्ति के लिए मौद्रिक नीति को आंशिक रूप से जिम्मेदार माना गया और अब टिकाऊ रिकवरी न लाने के लिए इसकी अक्षमता को दोषी माना जा रहा है। मौद्रिक नीति को और प्रासंगिक बनाने के लिए हमें एक क्रांति से कम कोई चीज नहीं चाहिए। संकट के समय से जारी प्रमुख दो शक्तियां इस क्रांति में सहायता दे सकती हैं। एक, उन्नत देशों के केंद्रीय बैंकों के नवोन्मेषी प्रतिसादों को यह सुनिश्चित करना है कि इस समय यह महामंदी से भिन्न है। दो, प्रोफे. स्टिगलिट्ज जैसे नोबल पुरस्कार विजेता के नेतृत्व में आर्थिक और वित्त के महान विद्वानों के बीच जीवंत अकादमिक चर्चा में यह अनुशंसा की जानी चाहिए कि भविष्य में मौद्रिक नीति का क्या ढांचा होना चाहिए?

अपने शुरुआती संबोधन में, गवर्नर डॉ. सुब्बाराव ने पहले आयाम की चर्चा की जिसमें मात्रात्मक और ऋण सहूलियत के उपायों, परिचालन ट्विस्ट तथा वायदा दिशा निर्देशन पर उन्नत देशों के केंद्रीय बैंकों की अत्यधिक निर्भरता को शामिल किया गया है, जिससे शून्य न्यूनतम तक (जेड़एलबी) मौद्रिक नीति के परंपरागत परिचालन के लिए लगाई गई सैद्धान्तिक सीमाओं से बचा जा सके। उन्होंने उन्नत देशों के केंद्रीय बैंकों के मौद्रिक नीति ढांचे में हाल की अवधि में हो रहे दूरगामी परिवर्तनों के बारे में उल्लेख किया, जिसमें फेड बेरोजगारी के स्पष्ट लक्ष्य घोषित कर रहा है; बैंक ऑफ इंग्लैंड सांकेतिक आय टारगेटिंग के साथ मुद्रास्फीति टारगेटिंग के संभावित प्रतिस्थापन की जांच कर रहा है, और बैंक ऑफ जापान मुद्रास्फीति के स्पष्ट उच्च लक्ष्य स्वीकार करके दीर्घ अपस्फीति से निपट रहा है।

संकट के पूर्व सर्वोत्तम व्यवहारों के बावजूद, उभरते बाजार के केंद्रीय बैंकों ने सामान्यतय: बहु उद्देश्यों के साथ कार्य करना जारी रखा जिसमें वित्तीय स्थिरता शामिल थी, उन्होंने असंभव त्रयी का भी प्रबंधन करने का प्रयास किया,जिसमें उन्होंने विनिमय दर प्रणाली और पूँजी खाता के लिए देश विशिष्ट दृष्टिकोण अपनाया। वैश्विक संकट के पश्चात, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में स्पिलओवर स्वरूप की अत्यधिक समायोजी मौद्रिक नीतियों ने, पण्य मूल्यों के दबावों को बढ़ाने के अलावा, असंभव त्रयी की चुनौतियों को बढ़ा दिया है। गवर्नर डॉ. सुब्बाराव ने अपने संबोधन में मौद्रिक नीति के संचालन में हाल के नवोन्मेषों में निहित मुद्दों के जटिल स्वरूप को शामिल किया है, इनमें से ज्यादातर प्रयोग हो सकते हैं, और वे कैसे भावी प्रमुख मौद्रिक नीति को प्रभावित कर सकते हैं। हमें प्रोफे. स्टिगलिट्ज़ जैसे प्रमुख विचारकों से मार्गनिर्देश लेना होगा। आज के सी डी देशमुख व्याख्यान में, उन्होंने संकट के पश्चात मौद्रिक नीति ढांचे के लिए पन्द्रह शीर्षक बताए हैं। जबकि इनमें से प्रत्येक अनुशंसा पर देश विशिष्ट संदर्भ में चर्चा करने और उनको समझे जाने की आवश्यकता है, इनमें से कुछ स्पष्ट रूप से नवीन और विचारोत्तेजक हैं।

एक, मौद्रिक नीति की उनकी व्यापक परिभाषा में भी वित्तीय नियामक नीति को शामिल किया गया है। यहां तर्क यह है कि वास्तविक अर्थव्यवस्था के लिए जो बातें मायने रखती हैं वे हैं- ब्याज दरें तथा वित्त की उपलब्धता। जबकि मौद्रिक नीति दोनों को प्रभावित करती है, विनियमन से ऋण तक पहुँच और ऋण की अवधि में सुधार हो सकता है।

दो, अदृश्य हाथों में विश्वास तथा बाजार दक्षता पर अत्यधिक निर्भरता से केंद्रीय बैंकों को बाजार विफलता की संभावना से आंखें नहीं मूंदनी चाहिए।

तीन, केंद्रीय बैंक को अपने पास उपलब्ध सभी संभव साधनों का प्रयोग करना चाहिए, इस धारणा को ध्यान में रखकर कि केवल दर आधारित नीति ही अधिक कारगर है।

चार, आस्ति बुलबुलों और समष्टि आर्थिक अस्थिरता से निपटने के लिए समष्टि विवेकपूर्ण विनियमन आवश्यक है।

पांच, मौद्रिक नीति को संवितरणकारी परिणामों के लिए संवेदनशील होना चाहिए।

छह, राष्ट्रीय मौद्रिक नीति को वैश्वीकरण प्रेरित स्पिलओवर की समस्या के निराकरण के लिए तैयार रहना

*3 जनवरी 2013 को ताज महल पैलेस, मुंबई में प्रोफे. स्टिगलिट्ज के द्वारा दिए गए सी डी देशमुख स्मारक व्याख्यान के अवसर पर भारतीय रिज़र्व बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री दीपक मोहंती द्वारा दिया गया धन्यवाद ज्ञापन।

चाहिए, और इस संदर्भ में पूँजी नियंत्रण को नीति टूलकिट का एक अंग होना चाहिए।

प्रोफेसर स्टिगलिट्ज की अधिकांश अनुशंसाएं उभरती और विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं के हममें से बहुतों के लिए सहज रूप से मनभावन लग रहीं हैं। भारत में हमने मौद्रिक नीति के संचालन के लिए एक बहु उद्देशीय और बहु संकेतक दृष्टिकोण अपनाया है। जबकि मूल्य स्थिरता मुख्य उद्देश्य बनी हुई है, वित्तीय स्थिरता को मौद्रिक नीति का एक स्पष्ट उद्देश्य माना गया है। हमने संकट के पहले भी समष्टि विवेकपूर्ण उपायों को एक स्थिरीकरण लिखत के रूप में प्रयोग किया है। वित्तीय क्षेत्र के सुधारों और पूँजी खाते के उदारीकरण के प्रति हमारा दृष्टिकोण सतर्कता तथा क्रमिकतावादी रहा है। हम मानते हैं कि क्षेत्र विशिष्ट नीतियों के माध्यम से किसी क्षेत्र में ऋण तक पहुँच में सुधार लाना मौद्रिक नीति का अभिन्न हिस्सा है। हम समावेशी वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए एक मध्यवर्ती उद्देश्य के रूप में वित्तीय समावेशन की ओर भी तेजी से बढ़ रहे हैं।

हमें, रिज़र्व बैंक में, समष्टि-आर्थिक नीतियों की माइक्रो-नींव को मजबूत करने के लिए प्रोफे. स्टिगलिट्ज के संदेशों को अति समीपता से देखने की आवश्यकता है। 1.2 बिलियन आबादी वाली एक विशाल और विषम अर्थव्यवस्था के लिए, मौद्रिक नीति की माइक्रो-नींव हमारे लिए वास्तव में एक बड़ी चुनौती है।

देवियो और सज्जनो, पंद्रहवां सी डी देशमुख स्मारक व्याख्यान देने हेतु हमारे आमंत्रण को स्वीकार करने के लिए और हमें बहुत अधिक विचारोत्तेजक तर्क प्रदान करने के लिए, मैं प्रोफे. जोसेफ स्टिगलिट्ज को हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूँ, इससे मुझे विश्वास है कि न केवल रिज़र्व बैंक में बल्कि वैश्विक तौर पर बहस तथा शोध को और अधिक प्रोत्साहन मिलेगा।

मैं श्रीमती अन्या स्टिगलिट्ज को उनकी गौरवमयी उपस्थिति के लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं स्व. डॉ. सी डी देशमुख के परिवार के सदस्यों को इस अवसर को गौरवान्वित करने के लिए धन्यवाद देता हूँ।

इस कार्यक्रम के सफल संचालन में हमारे गवर्नर डॉ. डी सुब्बाराव के निर्देशन और उनकी गहरी अभिरुचि को बहुत अधिक श्रेय जाता है, इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

मैं अत्यधिक उत्साह के साथ इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने वाले सभी विशिष्ट आमंत्रित महानुभावों को धन्यवाद देता हूँ। मैं रिज़र्व बैंक के अपने सभी सहकर्मियों को भारी संख्या में अपनी सहभागिता के लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं ताज होटल के ईवेंट प्रबंधन दल और सभी सेवा प्रदाताओं को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं बैंक के संपर्क अधिकारियों को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

अंत में, मैं आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग के परामर्शदाता के यू बी राव तथा उनके दल को अवश्य धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने इस कार्यक्रम के हर पहलू का आयोजन बड़ी सतर्कतापूर्वक किया।

एक बार पुन: सबको धन्यवाद।